शोध-प्रारूप

मुण्डारी साहित्य में बा सरहुल गीतों का सांस्कृतिक अध्ययन

स्नातकोत्तर मुण्डारी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

पीएच॰डी॰ उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रारूप

संकाय - जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा
वर्ष 2024

शोध निदेशक

डा0 बीरेन्द्र कुमार सोय
असिस्टेंट प्रोफेसर
स्नातकोत्तर मुण्डारी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधकर्ता

बिरसा पुर्ती
यू0जी0सी0 नेट
एम0ए0(मुण्डारी)
स्नातकोत्तर मुण्डारी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

मुण्डारी साहित्य में बा सरहुल गीतों का सांस्कृतिक अध्ययन

प्रस्तावित शोध प्रारूप

भारत की विशाल जनसमुदाय में मुण्डा आदिवासियों की एक विशिष्ट जीवन पद्धति एवं पहचान है। प्राचीन काल से जंगलों पहाड़ों की गोद में स्वतंत्र रूप से रहने वाले आदिम जनजाति मुण्डाओं का स्थान भारत में चैथा एवं झारखण्ड में दूसरा है।

विश्व के परिपेक्ष्य में मुण्डाओं का प्राचीनता एवं उनके भौगोलिक क्षेत्रों की बात किया जाय तो हम विज्ञान को छोड़कर यदि पाषाण काल के ऐतिहासिक तत्वों का विश्लेषण करते हैं, तो मृत शरीर को जमीन में गाड़ना, कब्र के उपर में पत्थर चढ़ाना महापाषाण और बगल में पत्थर गाड़ना (पत्थलगड़ी) आदिवासी मुण्डा समाज में है।

इनकी भाषा की बात करें तो अफ्रीका के सुडान में, जो बोली जाती है, उसके साथ, मुण्डारी, संथाली, हो और खड़िया, बोली का शब्द मिलना इस बात का प्रमाण है कि सूडान में आज भी मुण्डा, पुरखे और मुण्डारी लोक नृत्य है।

आज भी विशाल प्रक्षेत्र में ससनदिरि अफ्रीका, सुडान, चीन, भूटान और भारत में नागालैण्ड, मेघालय, मिजोरम, मणिपुर, असम में है। मुण्डा लोग सिन्धु घाटी और हल्दी घाटी में आर्यों से लड़ाई किए। फिर सिन्धु घाटी से आधे लोग काशी बनारस होते हुए नागालैण्ड, नेपाल तक पहुँच गये दूसरा जत्था सिन्धुघाटी से नागपुर आए। फिर मुण्डाओं का जत्था नागपुर से छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश होते हुए उत्तर प्रदेश के तमसा नदी तट पर स्थित आजमगढ़ (वर्तमान जिला) जा पहुँचा और वहाँ एक गढ़ बनाकर रहने लगे। वहां कई वर्षों तक रहने के पश्चात् मुण्डा लोग बिहार की ओर कूच कर गये, और बिहार के रोहतास में एक गढ़ स्थापित किये। रूइअ मुण्डा को उस गढ़ का शासक चुना गया, जिसके नाम पर उस गढ़ का नाम रूइदास गढ़ पड़ा, जो बाद में अपभ्रंश होकर वर्तमान में रोहतास गढ़ हुआ। उसी दरमियान मुण्डा और कुडुख (वर्तमान उराँव) लोगों के बीच मिलन हुआ। कई वर्षों तक साथ रहने के बाद मुण्डाओं के साथ कुडुख लोग भी नालन्दा, मगध, गया, नवादा, होते हुए बिहार के उतरी छोटानागपुर के पठार में प्रवेश किये। इसके पश्चात हजारीबाग के कोडरमा हेन्देगीर (हेन्देबुरू) बड़कागाँव के दुर्गम घने वन-पठार-पहाड़ों को पार करते हुए उमेडंडा जा पहुंचे। यहाँ के बाद बुण्डू-बुकरू में डेरा डाला गया और उसके आस-पास गाँवों को बसाया गया। नेतरहाट क्षेत्र में मुण्डाओं की पहली काबिला असुर और दूसरी, मुण्डा काबिला/जत्था में लड़ाई हुई थी, जिसका पता सोसो बोंगा की, लोक कथा/गाथा के रूप में बताया जाता है। उसे ही असुर और मुण्डाओं की लड़ाई कही गई। असुर मुण्डा जनजाति का ही एक ईकाई है। आज भी छोटानागपुर में असुर जनजाति के लोग मुण्डाओं के ईष्ट सृष्टिकर्ता सिङबोंगा की पूजा करते हैं। बाद में पिठोरिया के मुड़हर पहाड़ को गढ़ अर्थात शासन का केन्द्र बनाया गया। सुतिया मुण्डा को राजा बनाया गया। जिसके नाम से उस गढ़ का नाम सुतिअम्बे गढ़ पड़ा। महाराजा मदरा मुण्डा अन्तिम मुण्डाराजा थे।

इधर चुटू मुण्डा ने चुटिया में अपना गढ़ स्थापित किया, जिसे चुटिया गढ़ के नाम से जाना जाता था। इसी तरह 21 हजार मुण्डा लोग 21 गढ़ में बंट गये। प्रत्येक गढ़ में एक एक राजा हुए। इस प्रकार से डोंयसा, कुकरा,

नवरत्नगढ़, पालुम गढ़, कलिंजरगढ़ सोनपुर गढ़, लोहागढ़, इत्यादि और भी गढ़ों की स्थापना की गयी थी। सोनाहातु क्षेत्र के चोकाहातु के बड़े क्षेत्र में बड़े पैमाने पर मेगालिथ का होना, खुंटी के इर्द गिर्द कई स्थानों में असुर और मुण्डाओं के पुरातात्विक अवशेषों के मिलने से यह प्रमाणित होता है कि अति प्राचीन काल में वहां सबसे पहले असुर और मुण्डा लोगों का पदार्पण हुआ था।

भाषायी दृष्टिकोण से वैज्ञानिकों ने उनकी भाषा को ऑस्ट्रो एशियाटिक या आग्नेय के अन्तर्गत या मुण्डा जाति के नाम पर मुंडा भाषा परिवार के रूप में अभिहित किया है इनका निवास स्थान मुख्य रूप से पूरे भारत में झारखण्ड, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश पश्चिम बंगाल असम, अंडमान निकोबार आदि राज्यों में है। इसके अलावे ये भारत के बाहर अफ्रीका, सूडान, बंग्लादेश आदि में भी पाये जाते हैं।

जनसंख्या:-

2011 की जनगणना के अनुसार इनकी जनसंख्या करीब 12.29 लाख दर्शायी गयी है। परन्तु अब जबकि एक दशक से अधिक समय व्यतीत हो चुका है, जनसंख्या 12.29 लाख से उपर हो गई होगी।

मुण्डा समाज युगों से प्राकृतिक परिवेश के सानिध्य में रहते आये हैं। इनका प्रकृति-प्रेम और उनके प्रति आस्था इनके गीतों, कविताओं, और कथाओं में दिखाई पड़ता है। जगदीश त्रिगुणायत का तो यहाँ तक मानना है कि यह जाति ही कवितामय है, जिसका संस्कार प्रत्येक व्यक्ति पर विद्यमान है। मुण्डाओं में एक प्रचलित कहावत है, ‘‘सेनगे सुसुन काजिगे दुरङ, डुरिगे दुमङ’’ अर्थात चलना ही नृत्य है बोलना ही गीत है एवं नितम्ब ही मांदर हैं।

मुण्डाओं की जीवन शैली के प्रत्येक पर्व - त्योहारों में इनका नृत्य-गीत-संगीत अत्यंत ही महत्वपूर्ण है। इसके अनुसार गीतों का महत्व भी अधिक है। सबसे बड़ी बात यह है, कि इनके इन्हीं गीतों में उनका इतिहास संस्कृति-सभ्यता, प्रकृति-प्रेम, जीवन-मुल्य आदि विशेषताएँ दिखलायी पड़ती हैं।

बा सरहुल आदिवासियों का प्रमुख पर्व है, जो झारखण्ड उड़ीसा और बंगाल के आदिवासियों द्वारा मनाया जाता है इसे प्रमुख रूप से मुण्डा, संथाल, उराँव, हो, भूमिज, असूर, खड़िया आदि जनजाति के लोग मनाते हैं।

यह पर्व नये साल की शुरूआत का भी प्रतीक माना जाता है यह उत्सव चैत्र महीने के चैत्र शुक्ल में तृतीय से पंचमी तक मनाया जाता है। हलांकि क्षेत्र विशेष में अपने सुविधा के अनुरूप पहले या बाद में चैत्र शुक्ल पूर्णिमा तक मनाया जाता है।

बा सरहुल पर्व वास्तव में मानव के प्राकृतिक सृष्टिकर्ता सिङबोंगा, ग्राम देवी-देवता, बुरू बोंगा, इकिर बोंगा, आदिङ गृहदेव आदि पुरखों का ही समन्वय हैं।

संस्थाएँ:-

मुण्डा समाज में मुंडा-मानकी पड़हा- पंचायत एवं ग्राम-सभा जैसी सामाजिक संस्थाएँ विद्यामान है। ग्राम सभा या पड़हा के अपना नियम कायदे होते हैं। उसी के तहत् पूरा गाँव नियंत्रण में रहता है। कोई भी सामुहिक आयोजनों का निर्णय ग्राम सभा में लिये जाते हैं। इसके अलावे गितिइः ओड़अः या जारू ओड़अः अर्थात युवा गृह जैसी सामाजिक एवं शैक्षणिक संस्था भी होती है, जहाँ युवक-युवातियों को सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं व्यक्तिगत जीवन से संबंधित शिक्षाएँ दी जाती है।

विषय वस्तु : मुण्डारी साहित्य में बा सरहुल गीतों का सांस्कृतिक अध्ययन।

इसके अन्तर्गत सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, भौगोलिक, दर्शन विषय, प्राकृतिक संसाधन, प्राकृतिक सौन्दर्य पर्यावरण, जलवायु, मान्यता, रीति-रिवाज आदि मुण्डाओं के बीच प्रचलित पर्व-त्योहार संस्कार, संस्कृति आदि समाहित है।

विश्व दृष्टिः-

बा सरहुल त्योहार पर्यावरण संरक्षण, प्रकृति प्रेम, आस्था और संस्कृति का प्रतीक है। डॉ० रामदयाल मुण्डा ने संगीत नृत्य के माध्यम से मुण्डा, संस्कृति को विश्व स्तर पर पहचान दिलायी है।

प्रेरणा:-

झारखण्ड लोक पर्व के मामले में काफी समृद्धि रहा है, जिसमें यहाँ के जनमानस कि संस्कृति रची-बसी है। मुण्डा समाज एक काव्यप्रेमी अथवा संगीत प्रेमी समाज है। बा सरहुल को मुण्डा लोग बड़े ही आस्था विश्वास और सौहार्दपूर्ण तरीके से मनाते हैं।

मेरा जन्म संबंधित समाज के एक साधारण परिवार में हुआ था। ऐसे में मुंडा भाषा, साहित्य संस्कृति पर्व-त्योहार और संगीत नृत्य से परिचित होना लाजिमि है!

मेरी शिक्षा दीक्षा प्राथमिक से दसवीं तक ईसाई मिश्नरी संस्थान के विद्यालयों में हुई थी। मेरा छात्र जीवन छात्रावास में रह कर व्यतीत हुआ। इसके बावजूद बचपन से मेरा रुझान, मुण्डारी, भाषा, साहित्य, संस्कृति पर्व-त्योहार नृत्य संगीत की ओर था।

मुझे मुण्डारी भाषा संस्कृति की गहराई से जानने-समझने की अभिलाषा बचपन से थी। फलस्वरूप मैंने स्नातक में मुण्डारी प्रतिष्ठा विषय को चुना और इसी विषय से स्नातकोत्तर की उपाधि एवं राष्ट्रीय पात्रता जाँच परीक्ष

में उत्तीर्ण हुआ। उस दरम्यान काशीनाथ सिंह काण्डे मुण्डा की संगीत रचना ससङबा एवं गुइरम उपन्यास, डॉ० रामदयाल मुण्डा का रचना, सेलेद, हिसिर, प्रो. दुलाय चन्द्र मुण्डा का रचना बम्बरू बुधुनाथ शेखर द्वारा रचित गीत बुदुबाबू एवं उनकी रचनाएँ आदि गीत संग्रहां े का अध्ययन किया। इसके अलावे मुझे जगदीश त्रिगुणायत का लोक गीतों का संग्रह बाँसुरी बज रही है डब्ल्यू जी.आर्चर., एस. ए. बी. डी. हंस ‘‘का मुण्डा दूरङ’’ आदि पुस्तकों का अध्ययन अध्यापन से शोध कार्य करने की प्रेरणा मिली।

साथ ही डॉ. रामदयाल मुण्डा के सांस्कृतिक नृत्य दल के साथ कई मंचों पर नृत्य प्रदर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इन सबके फलस्वरूप जिससे ‘‘मुण्डारी साहित्य में बा सरहुल गीतों का सांस्कृतिक अध्ययन’’ करने की योजना मेरे मन मस्तिष्क में जागृत हुई।

पूर्व अध्ययनः-

शरत चन्द्र राय 1854, फा० हॉफमैन, ए० नोतरोत, डब्ल्यू० जी० आर्चर एवं जगदीश त्रिगुणायत आदि के द्वारा लिखी गई पुस्तकों का समीक्षा किया, जिसमें पाया कि जो शोध कार्य के लिए विषय चुना गया है। उसके ऊपर विद्वानों ने बहुत ही सरसरी दृष्टि से उल्लेख किया है। किसी ने गहरायी से अध्ययन नहीं किया। इसमें शोध की अनेक संभावनाएँ हैं।

परिकल्पनाः-

मेरे विचार से इस कार्य को करने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान आवश्यक है।

1. सरहुल गीतों का सांस्कृतिक सामाजिक धार्मिक प्राकृतिक आर्थिक तथा दर्शन का महत्व।
2. मुण्डारी गीतों में कई विशेषताएँ भी है, जिसे मानव समाज के समक्ष प्रस्तुत करने की आवश्यकता है।
3. विस्तुत शोध एवं विवरण देकर गीतों में स्थित राग, छंद, अलंकार तथा श्रृंगार रस प्राकृतिक चित्रण संबंधी पक्षों का अध्ययन प्रस्तुत करने की परिकल्पना है।

शोध समस्याः-

मुण्डा समाज एक संगीत प्रेमी एवं संस्कृति प्रेमी समाज है। इनके लोकगीतों पर्व-त्योहारों में संस्कृति की झलक स्पष्टतः दिखलाई पड़ती है। परन्तु साहित्य में कई लिखित विद्याओं का अभाव है। जो आधुनिक साहित्य में आवश्यक सरहुल संबंधी गीतों का वर्णन/विश्लेषण है। जो कि मुण्डारी साहित्य के समृद्धि को सम्पुष्ट करता है।

समाज पर प्रभावः-

इस अनुसंधान से झारखण्ड में रहने वाले आदिवासी जनजाति समूह के अनुठी परम्परा भाषा, संगीत, संस्कृति नृत्य आदि की जानकारी सभी लोगों को आसानी से प्राप्त होगी। अन्य समाज के लोग सरहुल पर्व के सांस्कृतिक मूल्यों को समझ पायेंगे। आपस में सामाजिक सद्भावना और भाई चारा की भावना बढ़ेगी।

शोध प्रविधि:-

शोध के लिए निम्नलिखित प्रविधियों का आधार लिया जायेगा।

क. इसमें सामाजिक और साहित्यिक विधि दोनों को शामिल किया जायेगा।
ख. सर्वेक्षण पद्धति में विद्धानों का साक्षात्कार अनुसूची, प्रश्नावली और व्यक्तिगत सम्पर्क अध्ययन प्रविधि का आधार बनाया जायेगा।
ग. अन्बेषणात्मक एवं निरूपणात्मक
घ. विश्लेषणत्मक एवं निदानात्मक

सामग्री संकलन के लिए उपयोग में आने वाले उपकरण।

1. संदर्भ ग्रंथ
2. टेप रिकाॅर्डर एंड्रोयड मोबाईल इंटरनेट कम्प्यूटर प्रिन्टर कैमरा पत्र व्यवहार पत्र-पत्रिका एवं नक्शा आदि।

शोध क्षेत्र:-

झारखण्ड राज्य का जिला खूंटी के अन्तर्गत खूंटी मरंगहादा, सायको, मुरहू, तोरपा, तपकारा, कर्रा को कार्य क्षेत्र के रूप में चुना है जहाँ मुण्डा बहुल क्षेत्र है। इसके अलावे चतरा जिला का भेलवा टांड पश्चिम सिंहभूम का बंदगाँव आदि।
मुण्डारी साहित्य में बा सरहुल गीतों का सांस्कृतिक अध्ययन अनुक्रमाणिका

- प्रस्तावना
- प्रस्तुत शोध कार्य की प्रेरण एवं उपादेयता
- प्रस्तुत शोध कार्य की विषय व्यप्ति
- प्रस्तुत शोध कार्य की अध्ययन पद्धति
- प्रस्तुत शोध कार्य से संबंधि किए गये पूर्व शोध कार्यों की समीक्षा।

प्रथम अध्याय

1. मुण्डारी साहित्य में बा सरहुल सामान्य परिचय
2. बा सरहुल के रूप
3. बा और संस्कृति का संबंध
4. बा सरहुल की विषेषताएँ

द्वितीय अध्याय

1. बा गीतों की अवधारणा
2. बा गीतों का स्वरूप
3. बा गीतों की विशेषताएँ
4. बा के वर्गीकरण का आधार

तृतीय अध्याय

मुण्डारी साहित्य में बा गीत

1. जदुर, ओर जदुर, गेना, चिटिद्।
2. बा गीत में रस, अलंकार
3. बा गीत के उपषाखएँ उपयोगिता, महत्व

चतुर्थ अध्याय

मुण्डारी साहित्य में बा गीत एवं संस्कृति

1. पूजन विधि एवं सामग्री
2. विशेष आराधना, दर्शन
3. सामूहिकता
4. नृत्य संगीत

पंचम् अध्याय

मुण्डारी साहित्यकार, लिखित ग्रन्थ, संस्कृति का संबंध

1. डा. रामदयाल मुण्डा
2. एस.ए.बी.डी. हंस 3. जगदीश त्रिगुणायत
4. कषीनाथ सिंह मुण्डा ‘काण्डे‘
5. प्रो. दुलाय चन्द्र मुण्डा
6. फादर जान बापतिस्त हाॅफमैन एस.जे.
7. जगदीश त्रिगुणायत
8. बुदु बाबू
9. डा. मनमसीह मुण्डू
10. भइया राम मुण्डा
11. डा. मनसिद्ध बड़ायउद्
12. दाउद दयाल सिंह होरो
13. निकोदीम केरकेट्टा
14. मेनस राम ओड़ेया
15. राम सिंह मुण्डा
16. सागू मुण्डा
17. मंगल सिंह मुण्डा

षष्टम् अध्याय

मुण्डारी गीतों का सांस्कृतिक महत्व

1. प्राचीनकाल
2. मध्यकाल
3. वर्तमानकाल

सप्तम् अध्याय

1. मुण्डारी साहित्य में गीतों की वर्तमान आवश्यकता
2. चुनौतियाँ/विकृतियाँ
3. समाधान के उपाय

उपसंहार - निष्कर्ष
आधार ग्रन्थ
संदर्भ ग्रंथ सूची

नोट: आवश्यक होने पर शोध प्रारूप में आंशिक परिवर्तन किये जा सकते हैं।

शोध निदेशक	शोधकर्ता
डा0 बीरेन्द्र कुमार सोय	बिरसा पुर्ती
असिस्टेंट प्रोफेसर	यू0जी0सी0 नेट
स्नातकोत्तर मुण्डारी विभाग	एम0ए0(मुण्डारी)
राँची विश्वविद्यालय, राँची	स्नातकोत्तर मुण्डारी विभाग
	राँची विश्वविद्यालय, राँची

आधार ग्रन्थ

पीएच.डी. प्राप्त शोध प्रबंध के नाम एवं रचना।

1. मुण्डारी भाषा का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन। - डा. बी.बी. नाग
2. मुण्डारी गीतों से गाये पहेलियों का तुलनात्मक अध्ययन। - डा. सत्यनारायण मुण्डा
3. मुण्डारी साहित्य की कथानक रूढ़ियाँ। - डा. मनसिद्ध बड़ाऊद
4. मुण्डारी लोकगीतों का प्राकृतिक चित्रण। - डा. जयसिह नाग
5. मुण्डारी लोक साहित्य में ऐतिहासिक तथ्य। - डा. सिकरादास तिर्की
6. मुण्डारी भाषा के क्षेत्रीय रूपों का भाषायी संरचना। - डा. बीरेन्द्र कुमार सोय
7. मुण्डा लोक परम्परा का वैज्ञानिक अध्ययन। - डा. अजीत मुण्डा
8. झारखण्ड के भाषा संस्कृति के विकास में जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग का योगदान। - डा. पार्वती मुण्डू
9. मुण्डारी साहित्य में संस्कार एक अध्ययन। - डा. जुरन सिंह मानकी
10. दुलय चन्द्र मुण्डा जीवन और सृजन। - डा. खातिर हेम्ब्रोम
11. डा. रामदायाल मुण्डा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व । - डा. शांति नाग
12. आधुनिक मुण्डारी कहानी, उदभव एवं विकास। - डा. किशोर सुरीन

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. आर्चर, डब्ल्यू जी - ‘‘मुण्डा दुरङ‘‘ - कैथोलिक प्रेस राँची बिहार, 1942
2. ओड़ेया बिरसा - ‘‘जव सुसुन अकड़ा‘‘ (मुण्डारी लोकगीत संग्रह)- झारखण्ड झरोखा प्रकाशन
3. ओड़ेया मेनस राम - ‘‘मथुराअः का’निको‘‘ -कैथोलिक प्रेस राँची
4. कन्डुलना, एस. डी. बी. जु. - ‘‘मुण्डा कोअः संसकिर‘‘ - छोटनागपुर मुण्डा संसकिर सगोम समइति लचड़ागढ़ गुमला, 2000 5. कुमार प्रवीण - ‘‘संताल‘‘ - (संस्कृति, समाज और विरासत)
5. केसरी डा. विखेश्वर प्रसाद - ‘‘साहित्य के तत्व एवं आयाम‘‘ - कमल प्रकाशन, 1972
6. खलखो शांति - ‘‘उराँव संस्कृति परिवर्तन एवं दिशाएँ‘‘
7. तोपनो सेम - ‘‘कुर्शीनामा मुण्डाओं का नृजातीय इतिहास‘‘
8. नवरंगी पी. शांति - ‘‘छोटनागपुर का इतिहास‘‘ - पुस्तक महल राँची, 1974
9. पोनेट, फादर पी. - ‘‘द मुण्डा वल्र्ड‘‘
10. पाहन, मानसिंह - ‘‘डोम्बरी बुरू‘‘ - पृथ्वी प्रकाशन दिल्ली, 2020
11. पाहन, मान सिंह - ‘‘अखड़ा‘‘ - पृथ्वी प्रकाशन दिल्ली, 2020
12. मुण्डा, सुभाष चन्द्र - ‘‘पंच परगना के मुण्डाओं पर हिन्दू धर्म का प्रभाव‘‘ (पुस्तक प्रति स्थान) - का ॅलेज रोड़ ताऊ बुण्डू, राँची, 2003

13. मुण्डा, डा. रामदयाल - ‘‘बा बोंगा/सरहुल मंत्र‘‘ - झारखण्ड झरोखा प्रकाशन, 2002
14. मुण्डा तुलसी नारायण - ‘‘आनायुम दुरंङ‘‘ - जनजातीय शोध संस्था राँची।
15. मुण्डा, डा. रामदयाल - ‘‘आदि धरम‘‘ - राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2004
16. मिंज, दिवाकर - ‘‘मुण्डा एवं उराँव का धार्मिक इतिहास‘‘ - कल्पना पब्लिकेशन्स दिल्ली, 2010
17. मुण्डा, सोमा सिंह - ‘‘मुण्डा‘‘ - बिहार सरकार कल्याण विभाग बिहार जन जातीय कल्याण शोध संस्थान मोराबादी, राँची, 1993
18. मुण्डा, काशीनाथ सिंह - ‘‘ससङबा‘‘ - मुण्डारी साहित्य परिषद राँची, 1988
19. मुण्डा, काशीनाथ सिंह - ‘‘गुइरम‘‘
20. मुण्डा, प्रो. दुलय चन्द्र - ‘‘सुड़ा सांगेन‘‘ - अधिक्षक सचिवालय मुद्रणालय राँची, 1966
21. मुण्डा, प्रो. दुलय चन्द्र - ‘‘बम्बरू‘‘ - नाॅवेल्टी आर्ट प्रेस राँची, 1966
22. मुण्डा, प्रो. रामदयाल - ‘‘सेलेद्‘‘ - सहकारी प्रकाशन समिति मोराबादी राँची, 1967
23. मुण्डा, डा. रामदयाल - ‘‘हिसिर‘‘ - सहकारी प्रकाशन समिति मोराबादी राँची, 1967
24. मुण्डा, छुनुक - ‘‘सिरजन सिंङबोगा ओड़ोः एटअः बोंगाको‘‘ - सिस्टम लिक प्रकाशन कचहरी चैक राँची, 2014
25. राय, एस.सी. - ‘‘मुण्डा एण्ड देयर कंट्री‘‘ - एशिया पब्लिशिंग हाऊस, कोलकाता, बोम्बे, 1912
26. शर्मा, वी.सी. - ‘‘एक मुण्डा विलेज‘‘ - 1957
27. सोय, डा. बीरेन्द्र कुमार - ‘‘मुण्डारी भाषा के क्षेत्रीय रूपों की भाषिक संरचना‘‘ - शोध प्रबंध अप्रकाशित राँची विश्वविद्यालय, राँची 2010
28. हाॅफ मेन, एस. जे. - ‘‘इनसाइकलोपीडिया आॅफ मुण्डारिका‘‘ - ज्ञान पब्लिकेशन हाऊस नई दिल्ली, 1993
29. हंस एस.ए.बी.डी. - ‘‘होड़ो जगर रेअः ऐतेहाइसि अर नङगम‘‘
30. हंस एस.ए.बी.डी. - ‘‘होड़ो संसङकिर बम्बरू‘‘
31. त्रिगुणायत, जगदीश - ‘‘बाँसुरी बज रही है‘‘ - बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पटना, 1970
32. त्रिगुणायत जगदीश - ‘‘मुण्डा लोक कथाएँ‘‘ - मुद्रित, राँची बिहार, 1970